Date
18/04/2020

Subject - Gender School and Society B.Ed. 2nd Year

बाल्यकाल के दौरान लिंग का सामाजिक निर्धारण

सामान्यत: बच्चे 3-4 वर्ष की आयु मे लैंगिक पहचान नही कर पाते और इस कारण प्राय: बोलते हुए विपरीत लिंगी शब्दो का प्रयोग करने लगते हैं। विशेषकर लडकियां इस अवस्था मे लडको वाले शब्द प्रयोग करने लगती है। जैसे - मैं खाऊँगा, मै आता हूँ इत्यादि। इसी को लैंगिक बोध की कमी कहा जाता है।

मनोवैज्ञानिक रूप से लैंगिक बोध सम्बन्धित प्रत्यय :-

1. **लैंगिक स्थिरता :-** लैंगिक स्थिरता का तात्पर्य है। बच्चों की लिंग के प्रति यह समझ कि लिंग उम्र भर नही बदलता, स्थिर ही रहता है।

2. **लैंगिक अपरिवर्तनशीलता :-** लैंगिक अपरिवर्तनशीलता वह प्रत्यय है यदि इसका विकास बच्चे मे नही होता तो बच्चे को विपरीत लिंग के व्यवहार को अपनाने मे संकोच होता है। - जैसे यदि बच्चे को यह समझ नही है तो वह नाटक मे अभिनय के दौरान कि वह लडका बन जाएगी ऐसी धारणा बना ले।

3. **लिंग - वर्गीकरण सम्रूपता :-** जैविक रूप से अंगो की बनावट के आधार पर अपने आप को लडका या लडकी समझना, लिंग वर्गीकरण सम्रूपता कहलाता है।

18-04-2020 16:03

4. जैविक लिंग :- शरीर में उपस्थित जननांगों के आधार पर जैविक लिंग का निर्धारण होता है व इन जननांगों में अन्तर होने के कारण ही पुरुष व स्त्रियों को विशेष लिंग का माना जाता है।

5. सामाजिक लिंग व्यवहार :- स्त्री एवं पुरुष दोनों ही जैविक आधार पर भिन्न होने के कारण उनके सामाजिक गण व व्यवहार के प्रति समाज, सामाजिक लिंग व्यवहार का निर्धारण करता है।

6. लैंगिक रूढिबद्धता :- स्त्री एवं पुरुष में भिन्नता के प्रति सांस्कृतिक विश्वास और मान्यतायें लैंगिक रूढिबद्धता कहलाती है।

7. लिंग भूमिका :- विभिन्न परिस्थितियों में स्त्री और पुरुषों की अपेक्षित व्यवहारों को लिंग भूमिका कहते है।

बांडुरा सामाजिक अधिगम सिद्धान्त के अनुसार - बच्चा देखकर दूसरों के व्यवहारों का अनुसरण करके भी सीखता है, इस सिद्धान्त के आधार पर बच्चे अपने लिंग के अनुसार मां-बाप के व्यवहारों का अनुसरण करते है व उनके व्यवहारों को अपनाने लगते है, उनकी यह धारणा बन जाती है कि यदि मैं पापा की तरह काम करूंगा तो लड़का, व ममी की तरह तो लड़की

8. संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त :- संज्ञानात्मक विकास सिद्धान्त की यह मान्यता है कि बच्चो में लैंगिक पहचान विकासित होती है। स्व का निर्माण पहले होता है फिर वो लिंग विशेष के व्यवहारों को अपनाने लगते है।

18-04-2020 16:04

9. लैंगिक स्किमा सिद्धान्त :- यह सिद्धान्त बेम [BEM] द्वारा प्रतिपादित किया गया है, इनका मानना है कि बच्चो मे अपने लिंग से सम्बन्धित समझ या ज्ञान, सामान्य ज्ञान से ज्यादा महत्वपूर्ण होती है। बच्चो के लिए शरीर के अंगो की पहचान करना जितना सहज है उतना यह जानना नही कि उनका लिंग कौन सा है। बेम की मान्यता है कि लैंगिक पहचान सरल ज्ञान नही होता है।

इस सिद्धान्त की मान्यता है कि " लैंगिक समझ, अंतर्ज्ञानात्मक ढाँचा के प्रतिबिम्ब के कारण होता है जो स्त्री और पुरुष की भूमिका और विशेषताओ के प्रति सजग समाज की मान्यताओं और विश्वास के परिणामस्वरूप बनता है। "

इस प्रक्रिया मे माता - पिता के निर्देश स्त्रियों और पुरुषो का विशेष व्यवहार, बच्चो मे किसी विशेष लिंग व्यवहार निर्धारण या लिंग सम्बन्धी स्किमा का निर्माण करते है।

* लैंगिक स्किमा :- " किसी विशेष लिंग व्यवहार का निर्धारण, "

Continue---

Nidhi Tyagi
18/04/2020

18-04-2020 16:04